[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3617

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मुगल कालीन चित्रकला (रेखा, रंग और अलंकरण के सन्दर्भ में)

सन्तोष कुमार यादव
शोध छात्रा, विश्वविद्यालय लखनऊ

रेखां प्रशंसन्त्याचार्याः वर्त्तनां च विचक्षणः।
स्त्रियो भूषणमिच्छति वर्णाद्यमिरे जनाः।।
–चित्रसूत्र, 41/11

उपरोक्त श्लोक से यह पता चलता है कि रेख रंग वर्त्तना और अलंकरण इन चारों के सामूहिक मिलन से ही सुन्दर चित्र का निर्माण होता है। ये चारो तत्व किसी भी चित्र मे प्राण उत्पन्न करने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इन तत्वों के बिना हम किसी भी कला को पूर्ण नही कह सकते है। मानवीय सभ्यता के शुरूआत से लेकर अब तक कला मे चाहे कितना भी परिवर्तन हुआ हो कला मे ये तत्व आज भी आज भी उतना ही महत्व रखते है जितना कि पहले। अन्तर बस इतना हुआ है कि अब इसके प्रयोग करने का स्वरूप बदल गया है। इनके प्रयोग की महत्ता का वर्णन हम पहले ही एक श्लोक द्वारा कर चुके है। और जहां तक मुगल कला मे इनके प्रयोग की बात है तो इस कला मे इनका प्रयोग बहुतायत हुआ है। हम यहां इस बात का वर्णन करना उचित होगा कि इस्लाम धर्म के शुरूआत से ही ईरान मे जो कला शैली पनपी वह प्राचीन भारतीय कला की आधार शिला थी। इसमे उसकी गहरी छाप निहित थी। इस्लाम धर्म मे मानव व जीवधारियों का चित्रण पूरी तरह से धर्म के विरूद्ध था। जिसके फलस्वरूप रंग, रेखा, अलंकरण, सूक्ष्म अलंकारिक आलेखनों एवं ज्यामितीय आकारों का विकसित रूप निखर कर आया है। धार्मिक कट्टरता मे लचीलापन आते ही पशु – पक्षियों, मानव आकृतियों और फूल पत्तियों का अंकन प्रारम्भ हो गया जो आज तक चला आ रहा है। मुगल कला के प्रारम्भिक अवस्था के चित्र ईरान की कला से प्रभावित है। जिनमें न केवल विषय ही बल्कि तकनीक, माध्यम, चित्रांकन और रंगयोजना आदि सभी ईरानी शैली पर आधारित है। जैसे जैसे उनकी कला भारतीय कला के समीप आती गई वैसे वैसे उसमे भारतीय कला के गुण नजर आने लगते है। मुगल काल की कला मे भारतीय कला के बहुत से गुण दिखते है परन्तु हम उनमे से तीन प्रमुख गुण रंग ,रेखा और अलंकरणका वर्णन यहा करनेजा रहे है जो निम्न है–

रेखा :– रेखा, रूप के दो आयामों को विस्तार देने मे समर्थ है। वह रूप के ठोसपन को प्रदर्शित करती है। रेखा के बारे मे सर हर्बर्ट रीड ने लिखा है कि :– The most remarkable quality of lion is to suggest mass or solid form. इसी प्रकार एक दूसरा विचार भी महत्वपूर्ण है :- With line it ispossible to synopsize the character and quality of forms with simplicity and with the utmost economy of means. -- Maitland Graves.

मुगल कालीन कला मे भारतीय कला के प्रभाव का जो पहला गुण दिखाई देता है वह है रेखा। किसी भी चित्र का वाहय शरीर रेखा होती है। वह चित्र को वाहरी आकार प्रदान करने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साधारणतया दो बिन्दुओं को मिलाने से रेखा का निर्माण होता है परन्तु चित्रकला मे कोमल, लोचदार, लयबद्ध और लचीली रेखाओं की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। जिसके अलग अलग प्रयोगों से चित्राधार पर अनेक प्रकार के आकार उभरते है। इन रेखाओं के विभिन्न तरह के प्रयोगों से मुगल कलाकारों ने पर्वत, बृक्ष, पुष्प और मानव आकृतियों की रचना की है। रेखा से आकृति मे गति व प्रवाह दिखता है। ये रेखाएं गोलाई लिये हुए है। गति का प्रभाव दिखाने वाली रेखा पेड़ो को हवा मे झूमते, वस्त्रों को फहराते हुए संकेतों को उभारती है। नर्तकी के पैरों के संचालन की अवस्था, हाथों की उंगलियों की भंगिमा और नेत्रों के कटाछ और हल्की सी मुस्कुराहटस से तिरछे अधरोष्ठ की लयात्मक गतिशीलता सभी कुछ रेखाओं के कुशल प्रयोग पर ही निर्भर करता है। सुन्दर और सशक्त रेखाओं का प्रयोग मुगल कला का अति विशिष्ट गुण है। वह अपनी सूक्ष्मता और बारीकी के लिये विख्यात है। मूंछ और सिर के एक एक बाल को बनाने के लिये चित्रकार ने कितनी महीन तूलिका का प्रयोग किया होगा। यह उसके इस महीनकारी को देख कर पता लगाया जा सकता है। दैनिक प्रयोग किये जाने वाले पात्र जैसे सुराही, हुक्का, पानदान आदि पर की गई नक्कासी और अलंकरण जिनमे फूलो और पत्तियों पर उभरी एक एक नस को बनाने के लिये सूक्ष्म रेखाओं का प्रयोग किया होगा। ये रेखायें जितनी महीन है उतनी ही सुन्दर भी है। मुगल कला मे चौड़े और अलंकृत हासिये का प्रयोग किया गया है। इनमें फूल पत्तियों से युक्त गतिमान लताएं और बेलों का अंकन किया गया है। हस्त मुद्राओं का अंकन कोमलता से परिपूर्ण है। मुकुट आदि मे बहुत बारीकी और धैर्य के साथ कार्य किया गया है। रेखाओं गोलाई, बल और सजीवता के कारण चित्रों मे निखार आ गया है। अलंकरण का कार्य केवल हासिये पर ही सीमित नही है। बल्कि फर्स, कालीन, पर्दो, छतों, और स्तम्भों

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आदि पर भी किया गया है। इन रेखांकनों मे फूल पत्ती , पशु पक्षी, और कहीं कहीं पर मानवाकृतियों का भी समावेश है। सुनहरे रंग से कपड़ों पर भी आलेखन बनाये गये है।

रंग :– मुगल कला के चित्रों का विशिष्ट गुण खिलते हुए रंगों का सुन्दर और सटीक प्रयोग है। इनमे दो प्रकार के रंगो का प्रयोग हुआ है प्राकृतिक और कृतिम। प्राकृतिक रंग खनिज और वानस्पतिक है तो कृतिम रंग रासायनिक और जान्तविक। मुगल कला मे दोनो प्रकार के रंगो का प्रयोग हुआ है। मुख्य रूप से नीले, पीले, लाल, श्वेत, भूरे, और नारंगी रगों का प्रयोग हुआ है। इन रंगों के परस्पर मेल से रंगों के अनेक प्रकार बनाये गये है। वानस्पतिक रंगों मे नील तथा जान्तविक रंगों मे कृमिदाना या गुलाबी का प्रयोग होता था। जयपुर में खड़िया तथा सोपस्टोन से भी सफेद रंग बनाये जाते थै चित्रों मे सबसे अधिक पीले रंग का प्रयोग हुआ है। जहां पर वास्तु का अंकन है वहां पर सफेद रंग का प्रयोग किया गया है। दारा शिकोह के विवाह का उत्सव नामक चित्र मे आतिशबाजी के लिये चटक पीले रंग का प्रयोग किया गया है। रात के गहन अंधकार मे चटक पीले और नारंगी के समन्वय से अग्नि का यथार्थपूर्ण चित्रण हुआ है। शोले की दहकती आग और उसमे फूटती चिंगारियां अत्यन्त स्वाभाविक है। घोड़े के रंगों मे भी विभिन्नता दिखाई देती है। नीले, भूरे, श्वेत मैरून, लाल आदि के कई रंगो में अश्वों का अंकन हुआ है। श्यामवर्णी, पीतवर्णी, गौरवर्णी, आदि कई रंगो मे आकृतियां चित्रित है। मुगल कालीन मानव आकृति के चहरे पर गुलाबी आभा के स्थान पर पीले रंग का प्रभाव दिखाया गया है। जो चन्दन के लेप से उत्पन्न आभा की ओर संकेत करता है। आसमान में घिरे बादल, अंधेरे और गहरे स्थानों के लिये गहरे भूरे रंग व जामुनी रंग का प्रयोग और इमारतों के लिये हल्का नीला और श्वेत रंग का प्रभाव है। जहां पर वस्त्रों में सिलवटें और तह दिखाई गई है वहां पर गहरे रंग का प्रयोग किया गया है। वस्त्रों मे उभार व गहराई दिखाने के लिये एवं शरीर मे मांशलता और गोलाई दिखाने के लिये किनारों को गहरे रंग से रंगा गया है। इनका प्रयोग बहुत ही साधारण तरीके से किया गया है। प्रायः एक तार रंग से आकृतियां एवं वस्त्र रंगे गये है। पृष्टभूमि की इमारतों की मोटाई दिखाने के लिये छाया का प्रयोग किया गया है। लाल रंग मे गेरू का प्रयोग किया गया है। कच्चे सिन्दूर से सिन्दूरी रंग बनाया जाता था। पीले रंग के लिये पीली मिट्टी का प्रयोग किया जाता था। हरा भाटा पहाड़ो से प्राप्त किया जाता था। सिंगरफ तथा नील मिलाकर बैगनी, हिरौंजी तथा काजल मिलाकर गहरा बैगनी, सिन्दूर तथा पीले से नारंगी और काजल तथा सफेदा मिलाकर फाख्ताई रंग बनाया जाता था। इन सभी प्राकृतिक रंगो का प्रयोग मुगल कला मे हुआ है।

मुगल शैली मे प्रयुक्त रंग सजीव है तथा रंग योजना सुन्दर व आकर्षक है। रंगो का प्रयोग इस तरह हुआ है कि प्रत्येक वस्तु स्पष्ट हो जाती है और सौन्दर्य मे भी कोई कमी नही आती है। हल्के तथा चटक रंगो का प्रयोग इस तरह हुआ है कि वह नेत्ररंजक लगते है। आंखो मे चुभन उत्पन्न नही करते है। रंगो का प्रतीकात्मक प्रयोग भी किया गया है। जिससे भावाभिव्यक्ति निखर कर आई है। मुख अंकन मे जिस प्रकार सौन्दयै को प्रधानता दी गई है उसी प्रकार गौर वर्ण के प्रति भी उसका झुकाव स्पष्ट दिखाई देता है। मुगल कला मे नायक, नायिका, सखी, बन्धु, बान्धव यहां तक की दास, दासियां भी गौर वर्ण से चित्रित की गई है। चित्रित किये गये सेवकों की यदा कदा ही कोई सांवली सूरत दिख जाती है। नायकों मे कृष्ण का चित्रण श्यामल और नीलवर्णी है। इस रंग में भी उनकी छवि निखर कर आई है। नायिका का मुख चेरी के फल सदृश्य व रक्तवर्णी अधरोष्ठों का अंकन भी इसी तरह किया गया है। सारे रंगो का प्रयोग जल मे ही हुआ है। चित्रों मे स्वर्ण रंगो का प्रयोग अधिक हुआ है। स्वर्ण का प्रयोग अधिकतर आभूषणों में सिंहासन आदि में और कहीं कहीं बर्तनों मे और अलंकारणों मे देखने को मिलता है। मुगल कला शैली में पीला रंग खुशी के प्रतीक के रूप मे प्रयोग किया गया है। बसन्तोत्सव के चित्र मे जहां पीला रंग बसन्त के आगमन को व्यक्त करता है वहीं पर नायक, नायिका और उनकी सखियों के उल्लास को भी प्रकट करता है। ऊष्ण रंगो का प्रयोग बहुत कम किया गया है। जहां कहीं भी लाल, गुलाबी और नारंगी रंग का प्रयोग किया गया है वहां वह प्रेम, वासना और उमंग के प्रतीक के रूप मे दिखाया गया है। हरे रंग का सुख और अहलाद के लिये तथा श्वेत रंग का राजसी ठाठ बाठ दिखाने के लिये प्रयोग किया गया है। इस प्रकार मुगल कालीन कालाकारों ने रंगो के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के द्वारा अभिव्यक्ति को और अधिक सशक्त और स्पष्ट स्वरूप प्रदान किया है।

अलंकरण :– मुगल कला के लघु चित्रों को देखने के बाद हमे उनके अलंकरण के प्रति लगाव का पता चलता है। अलंकरण भी मुगल कला शैली के प्रमुख गुणों मे एक है। वे अपनी कृतियों को सुन्दर बनाने के लिये परम्परागत तरीको का बहुतायत से प्रयोग किया है। इस शैली मे हमें नख से लेकर शिख तक के सौन्दर्य अलंकरण देखने को मिलते है। अलंकरण मे हम केश, वस्त्र और मानव आकृतियों के अलंकरण को ले सकते हैं। प्रकृति का भी अंकन किया गया है परन्तु इसका कही भी अलग से अंकन नही मिलता है। इसका चित्रण अलंकरण के सहायक के रूप में हासिये या परिपेक्ष्य मे ही मिलता है। हासिये पर बनाये गये चित्र जिसमे मुख्यतः फूल और पत्तियों का आलेखन बनाया गया है वह सभी इसी श्रेणी मे आते है। केश अलंकरण की बात करें तो हम पायेंगे कि नायिकाओं के काले घुंघराले बाल कन्धे और पीठ से लेकर कमर तक लहराते हुए दिखाये गया है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

जूड़े का भी अंकन किया गया है। बालों के सौन्दर्यवर्धन के लिये इसमे तरह तरह के फूल, गजरे और मुकुट पहने दिखाया गया है। पुरूषों को पगड़ी पहने दिखाया गया है। पगड़ी पर हीरों का काम किया गया है। पगड़ी के नीचे भी बालो का दिखाया गया है। वेशभूषा मे ईरानी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। नायिकाओं के परिधान मे कसी हुई चाली, पारदर्शी चुनरी, और फूलों की बूटियों से युक्त रंगीन पायजामों का अंकन किया गया है। इसी पर श्वेत रंग का घेरदार पारदर्शी पेशबाज है जो आगे की तरफ दो भागों मे विभक्त दिखाया गया है। पुरूषों के वस्त्रों मे अंगरखा प्रमुख है जो स्त्रियों के पेशबाज के समान ही पारदर्शी होता था। भारी लहगों का भी प्रचलन था जो हिन्दू और मुश्लिम दोनों धर्मो के लोगो के बीच पसन्द किया जाता है। आकृतियों के चित्रण मे व अलंकरण में वस्त्रों की सज्जा, आभूषण के अलंकरण, जूतियों के पटकों और पगड़ियों के अलंकरण, प्रकृति की सजावट जैसे कि फूलों से लदे हुए बृक्ष, बादल व पक्षी युक्स आसमान, कमल युक्त सरोवर आदि सभी के अंकन मे अलेकरण का पूरा ध्यान रखा गया है। बसन्तोत्सव के समय साही उद्याान मे राजपुरूषों के साथ उत्सव मानाती स्त्रियां अलंकरण से परिपूर्ण दिखाई दे रही है। सभी युवतियां आकर्षक प्रतीत हो रही है। चित्र मे फूलों से बनाई गई चादर की सेज सजी हुई है। बेल बूटे मे दौड़ते पशुओं का अंकन बहुत प्रभावशाली प्रतीत होता है। सम्पूर्ण चित्र मे बसन्त की सोभा विखरी पड़ी है। जहांगीर के शासन काल मे मुकल कला मे सजावटी तत्वों की प्रमुखता आ गई थी। चित्रों को आकर्षक बनाने के लिये रंगो के साथ स्वर्ण का प्रयोग सज्जा की दृष्टि से किया गया है। इसके साथ साथ इसे और अधिक सुन्दर बनाने के लिये बेलों की अलंकारिक डिजाइनों से उसे नेत्ररंजक बना दिया जाता था। स्त्रियों की ओड़नी, पटके, कमर के पायजामें में और पुरूष की पगड़ी, जूतियों, पलंग के पावों, विस्तर की चादर, दीवार की गुढेर, और रेलिंग की जालियों में अर्थात कोई भी ऐसा स्थान नही था जहां अलंकाण नही किया गया हो। अलंकरणों मे मुख्य रूप से फूलों की बेलों का अंकन मिलता है। आभूषणों मे विशेष रूप से सफेद मोती का प्रयोग हुआ है। इस शैली मे अलंकरण महीन और पास पास हुए है किन्तु प्रमुख वस्तु को प्रधानता दी जाती थी। कहीं भी अलंकार की वजस से विषय मे टकराव उत्पन्न नही हुआ है। परिपेक्ष्य को यथार्थ पूर्ण और सन्तुलित बनाया गया है। जैसा कि मुगल कालीन चित्रों को देखने से पता चलता है। एक बार देखने के बाद ही मानव आकृतियों के क्रिया कलापों या भावों पर ही ध्यान केन्द्रित रहता है। अलंकरण भी वातावरण का भाव प्रतीत होता है। यह कलाकारों की निपुणता ही है जो दर्शक को अपने कृति के सभी पक्षों के साथ जोड़े रखता है और दर्शक उस चित्र को देखने के बाद वही महसूस करता है जो कलाकार ने बनाते समय महसूस किया था।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मुगल कला शैली में रंग, रेखा और अलंकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। जिससे हम कह सकते है कि मुगल कला अपने मे पूर्ण है। कला कृतियों मे इन तीनों तत्वों का प्रयोग उसे और भी पूर्ण बनाता है। किसी भी कला के लिये रेखा, रंग और अलंकरण बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ये उसमे अलंकार का कार्य करते है। जिससे कलाकृतियां देखने मे आनन्द प्रदान करने वाली बन जाती है। कला में रेखा, रंग और अलंकरण का जहां जैसे उपयोगिता थी उनका वैसे ही प्रयोग किया गया है। अन्त मे हम कह सकते है कि मुगल काल मे श्रेष्ठ कलाकृतियों का निर्माण हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1, वाचस्पति गैरोला :– भारतीय चित्रकला
2, डा0 रीना सिंह :– अवध की चित्रकला
3, डा0 आनन्द कुमार स्वामी :– मुगल पेंटिग्स (केटलॉग आफ दी इंण्यिन कलेक्सन)
4, डा0 जे0 सी0 एस0 विकसिकन :– मुगल पेंटिग
5, डा0 रीता प्रताप :– भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास
6, आइने अकबरी (अनूवाद) खण्ड 3
7, डा0 शुकदेव श्रोत्रिय :– चित्रकला के मूलाधार
8, आर0 ए0 अग्रवाल :– कला विलास भारतीय चित्रकला का इतिहास
9, डा0 अविनाश बहादुर वर्मा :– भारतीय चित्रकला का इतिहास